'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Special Issue I– Emerging Trends & Issues in Research & Development
Global Impact Factor – 0.565 (2014) & 0.676 (2015)
ISSN : 2348-7143 (Online)
Jan-March- 2016

अज्ञेय काव्य भाषा में प्रयोगधर्मिता

डॉ. जयश्री गावित
विद्यावर्धिनी महाविद्यालय,
साक्री रोड, धुले

अजेय का साहित्य "भाव मुक्ति" का साधन है । संवेदना को जीव और जगत् से ग्रहण कर उसे तपने, पकने और सम्प्रेषित होने के बीच की प्रक्रिया है इस प्रक्रिया से तात्पर्य मुक्ति का साधन अभिव्यक्ति है । अभिव्यक्ति के समस्त माध्यमों मे भाषा सर्वाधिक सशक्त एवं प्रभावशाली माध्यम है । भाषा जितनी सूक्ष्म, भाव सम्प्रेषक, संदर्भ गर्भित स्थितियों का व्यंजक एवं कलात्मक होगी, अभिव्यक्ति उतनी ही सूक्ष्म एवं प्रौढ होगी । कविता के माध्यम के रुप में भाषा इतनी ही पुरानी है, जितनी स्वयं कविता । वास्तव में भाषा नये अर्थ, बोध, प्रतिमान, सत्कार आत्मसात करती हुई युग संदर्भो को व्यक्त करने वाली प्रणाली है ।"

वास्तव में भावों को भाषा के रुप में व्यक्त कर देने के बीच की इस प्रक्रिया में छोड़ने और ग्रहण करने का एक तनाव है, क्योंकि हर सूझ, हर अनुभव सम्प्रेषणीय हो, यह अनिवार्य नही है । इस तनाव से मुक्ति पाकर व्यक्त कर देना और वह भी भोक्ता और सर्जक के बीच एक अन्तर रखकर, अच्छे सर्जक, कलाकार और रचनाकार की विशेषताएँ है । शब्द, वाक्य अर्थ और ध्वनि, रुपकात्मकता, व्यंग विशेषण - प्रयोग मुहावरे, कथात्मक शिल्प - नाटकीयता, विजातिय और विदेशी शब्द लंबी कवितांए, लघु कविताएं और प्रयोग की नवीनता ।

सजग शब्द शिल्पी कवि अज्ञेय की काव्य भाषा में शब्द स्वानुभूति को प्रेषणीयता बनाने तथा सत्यान्वेषण में साधन बनकर आते है । सार्थक शब्द प्रयोग कवि प्रतिमा का प्रमाण होता है। उनमें तत्सम शब्दों की प्रचुरता है । कवि की भाषा तत्सम शब्दों से चलकर लोकजीवन तथा बोलचाल की भाषा की ओर उन्मुख हो गयी है । उनकी तद्भव पदावली पर ब्रजभाषा कशब्दों का प्रयोग द्रष्टव्य है। कविता को अर्थपूर्ण बनानेवाले सभी शब्दों का प्रयोग अज्ञेय व्यापक पैमाने पर करते है । अज्ञेय की वाक्य रचना में शब्दों का विशेष क्रम और मेल हुआ है । अज्ञेय की आरम्भिक कविताओं में वाक्यरचना गीतात्मक और छायावादी शिल्प से प्रभावित है । भाषा की रुपात्मकता की दृष्टि से अज्ञेय का काव्य वैशिष्ट्यपूर्ण है । काव्य भाषा में रुपाकात्मक भाषा लाक्षणिक, आलंकारिक और औपगम्य विधानमूलक होती है । अज्ञेय ने ऊपमानों का प्रयोग प्रेषणीयता कलिए किया है । उपमानों के नये प्रयोग चिंतनशील और संवेदनशील है ।

अज्ञेय काव्य में लोक प्रचलित शब्दों, संकेतों और मुहावरों का विपुल मात्रा में चित्रण हुआ है । मुहावरे भाषा की अर्थवत्ता को बढ़ाते है । अज्ञेय ने परंपरागत और नवीन दोनों प्रकार के मुहावरों का प्रयोग किया है । अज्ञेय के काव्य में मुहावरे अर्थ गर्भित, क्रियावाचक और परंपरागत है । उनमें कहीं कहीं क्रम परिवर्तन भी किया है । 'कितनी नावों में कितनी बार' संकलन में प्रयोगात्मक मुहावरों का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है ।

अज्ञेय के काव्य संकलनो में कथात्मक शिल्प और नाटकीयता तत्वों का भी प्रयोग हुआ है । नाट्यात्मकता, संवाद शैली, और कथात्मक शिल्प विन्यास से भाषा संपन्न बन गई । बोलचाल की भाषा, संबोधन शैली, वार्तालाप शैली, पत्र शैली, स्वगत कथन शैली आदि ने नाटकीयता का प्रयोग हुआ है । संवाद और सम्बोधन शैली का प्रयोग अज्ञेय ने प्रधान रुप से रुमानियत के लिए किया है । सम्बोधन शैली से कविता व्यक्तिगत धरातल से सामूहिक धरातल की ओर उन्मुख होती है । संवाद शैली से तनाव से मुक्ति का भी प्रयास किया गया है ।

अज्ञेय की रचनाओं में अंग्रेजी शब्दों का, उर्दू तथा फारसी के शब्दों का प्रयोग किया गया है । अज्ञेय काव्यभाषा शिल्प की अन्य एक विशेषता है, उनकी लम्बी कविताएँ, लघु कविताएँ और प्रयोग की नवीनता । अज्ञेय की लम्बी कविताएँ अनुभूति की सम्पूर्णता आत्मचितंन एवं जटिल मनोवैज्ञानिक व्यंग्य को प्रकट करती है । लम्बी कविता प्रदीर्घ केन्द्रीय विचार, आग्रह व्यापार से परिलक्षित लम्बे रचना विन्यास से जुड़ी हुई है । सूक्ष्म, वर्णनात्मकता बिम्बों की बहुलता, नाटकीयता, वन्यात्मकता, दार्शनिकता, नगर बोध, समष्टि बोध, मृत्यू बोध, राष्ट्रीयता प्रतीकबद्धता और मिथकीय शब्दावली का प्रयोग आदि उनकी लम्बी कविता की विशेषताएँ है ।

प्रतीकों की विपुलता और मिथकों की विविधता के कारण अज्ञेय का काव्य शिल्प हृदयकारी बन पड़ा है । अज्ञेय की दृष्टि में प्रतीक अज्ञात सत्यो का संधान करते है । प्रतीको की बहुलता के कारण अज्ञेय को 'प्रतीकवादी कवि' भी कहा गया है । अज्ञेय के काव्य में प्रतीकों का प्रयोग शिल्प योजना कअनुरुप वैयक्तिक तथा बौद्धिक है । उनके प्रतीक युगीन चेतना के अनुसार निर्मित है । अज्ञेय के काव्य में प्रतीकों में पुराने प्रतीकों का नूतन अर्थ भी मिलता है । अज्ञेय की प्रतीक योजना में वैविध्य है । प्रधान तथा प्रकृति जीवन और पौराणिक प्रतीकों का प्रयोग अज्ञेय ने किया है । उनकी प्रतीक सृष्टि नये भावबोध से आपूरित है । 'नदी के द्वीप', 'वर्षात', 'यह दीप अकेला', 'आशी खद्योत दर्शन', 'दीप से अगणित', 'हमने पौधे से कहा', 'क्योंकि तुम हो', आदि कविताएँ प्रतीकार्थी की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । मूलत: अज्ञेय के प्रतीकों ने समसामायिकता और नवीनता के साथ प्रसंग सापेक्षता है ।

अज्ञेय के काव्य में प्रतीक रचना की विविध कोटियों का विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है - व्यंग्यात्मक प्रतीक, पौराणिक प्रतीक, मिथकीय प्रतीक, यौन प्रतीक, प्रकृति प्रतीक, वैयक्तिक प्रतीक और दार्शनिक प्रतीक । अज्ञेय के व्यंग्य धर्मी प्रतीको के द्वारा वर्गभेद, महानगरीय सभ्यता, के अवगुणों पाश्चात्य सभ्यता के दुर्गणों, औद्योगिक विकास के फलस्वरुप विघटित मानवीय मूल्यों और समकालीन अराजकता पर करारा तमाचा मारा है । अज्ञेय के काव्य में प्रतीक रचना की एक अन्य कोटि यौन प्रतीको के रुप में मिलती है । अज्ञेय के यौन प्रतीकों में अतृप्ति का संकेत मिलता है पर सामान्यत: सौंदर्यानुभूति अंकुठित है । उनके प्राकृतिक प्रतीकों में वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शिशिर, हेमंत, मछली, पेड़, सूरज, चाँद, हरियाली, सांझ, तारा, नदी, धूप आदि मुख्य है । इनमें मानसिक दार्शनिक एवं प्रेम - भावमूलक प्रसंगो की योजना हुई है । अज्ञेय के दार्शनिक प्रतीक मुलत: आत्मा परमात्मा और प्रकृति के माध्यम से व्यक्त हुए है । नये प्रतीकों की रचना में अज्ञेय अधिक प्रयोगशील और तत्पर है । इनमें अभिव्यक्ति के नये आयाम मिलते है ।

काव्यशिल्प में प्रतीक साथ मिथक की चर्चा की जाती है । यह बिल्कूल स्पष्ट है कि अज्ञेयकाव्य में मिथकों का विपुल प्रयोग हुआ है । अज्ञेय ने मिथक को बिम्ब, प्रतीक से मुक्त मानकर, एक बड़ी काव्य शक्ति के रुप में चित्रित किया है । अज्ञेय के मतानुसार किसी संस्कृति के आदि काव्यो का एक मिथकीय स्तर होता है । वे मिथक जातीय संस्कृति के अंग होते है । उन्होने मनोवैज्ञानिक रुप से आदि बिम्बों से मिथक का सम्बन्ध माना है । सत्य की पहचान उसका उपयोग हमें मिथक की ओर ही ले जाते है । अज्ञेय के काव्य मिथक पौराणिक, रहस्यमूलक और प्रेम भावमूलक रुपों में प्रकट हुए है । 'इत्यलम' में ज्ञान के फल चखने का आदिम आख्यान शब्दबद्ध किया है । क्रौंच वध, गंगावतरण प्रसंग आदि उदाहरणों मे मिथकीय प्रतीकों का उपयोग किया है । अज्ञेय की रचनाओं में मिथकों का स्वतंत्र चित्रण कम मिलता है । मिथक अज्ञेय काव्य में पौराणिक प्रतीक, उर्वर मिथकों का सांस्कृतिक नवीकरण दृष्टि से विशिष्ट स्थान रखते है ।

भाषा, शिल्प, प्रतीक और मिथकों के बाद काव्य शिल्प का अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व है बिम्ब विधान। अज्ञेय के काव्य में शिल्प की दृष्टि से बिम्ब का अलग स्थान है । उनके काव्य-बिम्ब जीवन के सभी क्षेत्रों से चुने गये है । अज्ञेय की आरम्भिक कविताएँ आध्यात्मिक । परवर्ती कविताओं में बिम्ब जैसे 'बौद्धिकता पूर्ण सूक्तियों' के रुप में ढलते गये है। बिम्ब निर्मिति में अप्रस्तुत विधान और नये उपमानों का उपयोग किया गया है । इन बिम्बो में शब्दों का कसाब, हृश्यात्मक की पूर्णता, संश्लिष्टता और सधनता, ओत-प्रोत है । उनमें चाक्षुष, गुणों के साथ रंग, स्पर्श, घ्राण और ध्वनि बिम्बों को भी विपुलता है । अज्ञेय के बिम्बो में रुपक मानवीकरण आदि विशेषताएँ उपलब्ध है ।

अज्ञेय मात्र प्रयोगधर्मी कवि न होकर भाषा के सर्जक और शब्दान्वेषक के रुप में शब्दसाहचर्य की खोज करते है एवं शब्द संयोजनद्वारा अर्थवत्ता की सृष्टि करते है । उन्होने अपने काव्य में छंद, अलंकार आदि का भी प्रयोग किया है । इस प्रकार अज्ञेय की काव्य भाषा शिल्प की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । अज्ञेय भाषा प्रभू है, उनककाव्य बिम्ब जीवन के सभी क्षेत्रों से चुने गये है । उनकप्रतीक अनेकार्थ सूचक होते है । मिथक की भाँति उनमें स्वयंसिद्ध प्रकाश होती है । मिथकों क विपुल प्रयोगों से उनकी कविता गेयपूर्ण बनी है । मुक्त छंदो में लयबद्धता है । मुहावरों और अलंकारों कस्वाभाविक प्रयोग से उनकी कविता कामिनी का सौंदर्य बढ़ गया है । भाव और शिल्प दोनों अंगो से अज्ञेय की कविता अपने अनूठे सौंदर्य से सहदयों को आकृष्ट करती रहती है ।

समग्रत: हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रयोगवाद का उद्‌भव एक ऐतिहासिक घटना सिद्ध हुई। बदले हुए परिवेश में परिवर्तित जीवन मूल्यों और सामाजिक स्थितियों अनुरुप अभिव्यक्ति में परिवर्तन की अनिवार्यता स्वयं सिद्ध थी । सपनों की दूनिया छायावाद के जगत से हिन्दी कविता को यथार्थ की ठोस धरातल पर स्थापित करने का ऐतिहासिक कार्य अज्ञेय के नेतृत्व में प्रयोगवादीधारा ने किया। किसी महान काव्य की गरिमा एवं गौरव कवि के व्यक्तिगत जीवन मूल्यों और आदर्शो का प्रकटीकरण नही बल्कि उसकवैयक्तिक संकल्पों और आदर्शो के समाजीकरण में है जहाँ कवि कविचार कविता के लोक सापेक्ष चिंतन में अन्तर्निहित होता है । अगर अज्ञेय की कविता को इस दृष्टि से परखा जाय तो अज्ञेय

आरम्भ से ही व्यक्तित्व की सत्ता, स्वतंत्रता एवं उसकदायित्व के प्रति सजग हैं । तथापि अज्ञेय में समाज संपृक्ति का बोध भी अत्यंत प्रभावी है । भाव जगत की विविधता और गहराई, शिल्प कक्षेत्र में नित्य नूतन प्रयोगों से अज्ञेय की कविता आधुनिक हिन्दी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

संदर्भग्रंथः-

१) अज्ञेय साहित्य: प्रयोग और मूल्यांकन - डॉ केदार शर्मा.

२) अज्ञेय की कविता : एक मूल्यांकन - डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर

३) अज्ञेय और नयी कविता - डॉ. चंद्रकला त्रिपाठी

४) अज्ञेय का रचना संसार - जितेन्द्रनाथ त्रिपाठी

५) अज्ञेय काव्य की भाषा संरचना का अध्ययन - डॉ. निर्मला शर्मा

६) अज्ञेय की सर्जना : विविध आयाम - बालेन्दुशेखर तिवारी

७) अज्ञेय काव्य विषयक धारणाएँ - डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी